بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक 13.05.16 मस्जिद महमूद स्वीडन।

मस्जिदों की वास्तविक प्रतिष्ठा इमारतों के कारण नहीं अपितु उन नमाज़ियों के कारण है जो निष्ठा के साथ नामाज़ पढ़ते हैं। मस्जिद के निर्माण का दायित्व तभी अदा होगा जब उसको अधिक से अधिक इबादत करने वालों से आबाद करेंगे। स्वयं भी यहाँ आकर अपनी नमाज़ों से उसको आबाद करेंगे तथा तबलीग़ करके क्षेत्र के लोगों को भी इस्लाम की शिक्षा से परिचित कराएँगे।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इन आयात-ए-करीमा की तिलावत की फ़रमाई-

اِنَّمَا یَعۡمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰہِ مَنۡ اٰمَنَ بِاللّٰہِ وَالۡیَوۡمِ الۡاٰخِرِ وَاَقَامَ الصَّلٰوۃَ وَاٰتَی الزَّکٰوۃَ وَلَمۡ یَخۡشَ اِلَّا اللّٰہَ فَعَسٰۤی اُولٰٓئِکَ اَنۡ یَّکُوۡنُوۡا مِنَ الۡمُہۡتَدِیۡنَ ﴿۱۸﴾ [۹:۱۸]

اَلَّذِیۡنَ اِنۡ مَّکَّنّٰہُمۡ فِی الۡاَرۡضِ اَقَامُوا الصَّلٰوۃَ وَاٰتَوُا الزَّکٰوۃَ وَاَمَرُوۡا بِالۡمَعۡرُوۡفِ وَنَہَوۡا عَنِ الۡمُنۡکَرِ ؕ وَلِلّٰہِ عَاقِبَۃُ الۡاُمُوۡرِ ﴿۴۲﴾ [۲۲:۴۱]

अलहमदु लिल्लाह, आज अल्लाह तआला ने स्वीडन की अहमदिया जमाअत को अपनी दूसरी मस्जिद बनाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई जिसका नाम मस्जिद महमूद रक्खा गया है। सभी पुरुषों एंव महिलाओं ने माशाअल्लाह बड़ी निष्ठा की भावना इस मस्जिद के निर्माण में दिखाई है। यह एक बड़ी योजना थी जबकि यहाँ की जमाअत छोटी सी जमाअत है और इस कारण इनके लिए यह वास्तव में एक बड़ी योजना थी। जहाँ कमाने वालों ने बढ़ चढ़ कर क़ुर्बानियाँ की हैं तथा इस मस्जिद के निर्माण में यथासम्भव आर्थिक क़ुर्बानियाँ पेश की हैं वहीं महिलाएँ और बच्चे भी पीछे नहीं रहे और अल्लाह तआला के घर के निर्माण के लिए दीन को दुनया पर प्राथमिकता देने का उदाहरण क़ायम किया है। अहमदियों का आर्थिक सहयोग देखकर इंसान चकित रह जाता है। केवल एक मस्जिद के निर्माण का प्रश्न नहीं है। मस्जिदों का निर्माण, नमाज़ के सैन्टरों का निर्माण व ख़रीदना, मिशन हाऊसेज़ का निर्माण तथा ख़रीदने की योजनाएँ निरन्तर जारी हैं तथा इसके अतिरिक्त असंख्य अन्य ख़र्चे हैं और दुनया में हर जगह यह काम हो रहे हैं तथा फिर अन्य चन्दे भी साथ साथ चल रहे हैं। अहमदिया जमाअत में बहुत से ऐसे लोग हैं जिनका अल्लाह तआला की कृपा से यह स्वभाव है कि आर्थिक क़ुर्बानियाँ करने के लिए व्याकुल रहते हैं तथा जमाअत के लिए और ख़ुदा तआला के लिए ख़र्च करने की यह वह इस्लामी आत्मा है जो इस ज़माने में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम ने हम में फूंकी है। जिस प्रकार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जमाअत के लोगों की आर्थिक क़ुर्बानियों पर आश्चर्य प्रकट फ़रमाया था, आज भी जैसा कि मैंने कहा यह क़ुर्बानियाँ चकित कर देती हैं और यह सब अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से, अल्लाह तआला के हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किए गए वादे का प्रदर्शन है कि अल्लाह तआला आपकी आवश्यकताओं की पूर्ति करता रहेगा। जैसा कि अहमदिया जमाअत की अधिकांश योजनाओं में होता है। बहुत से काम हम वक़ार-ए-अमल के द्वारा भी कर लेते हैं तथा इस कारण से ख़र्चों में कुछ बचत भी हो जाती है। अतः अल्लाह तआला आर्थिक क़ुर्बानी करने वालों तथा उन लोगों को उच्च प्रतिफल प्रदान करे जिन्होंने इस मस्जिद तथा इस कॉम्पलैक्स के निर्माण में किसी प्रकार से भी योगदान किया है। बड़ी सुन्दर मस्जिद बनाई गई है, इस क्षेत्र के लोग भी इसकी सुन्दरता की प्रशंसा कर रहे हैं। बलिदान की भावना का प्रदर्शन किस प्रकार बच्चों और बड़ों ने किया, इसके कुछ उदाहरण पेश करता हूँ। एक ग्यारह वर्ष की बच्ची ने मस्जिद के चन्दे के लिए कुछ सौ करोनर पेश किए और बताया कि काफ़ी समय से उसने जो जेब ख़र्च जमा किया था वह मस्जिद के निर्माण हेतु देने के लिए आई है। दस ग्यारह साल की बच्ची, अमीर साहब के पास अथवा जो भी प्रबन्धक हैं चन्दे लेने

वाले, उनके पास आई और पाँच सो करोनर मस्जिद के निर्माण के लिए अदा किए और बताया कि उसके पास दो तोते थे जिन्हें बेच कर उसने यह धन राशि मस्जिद के लिए प्राप्त की है। यहाँ इन देशों में pet अथवा पालतू जानवर रखने का बड़ा चाव है परन्तु अहमदी बच्ची ने यहाँ के बच्चों की भांति अपने पालतू जानवर को प्राथमिकता नहीं दी बल्कि ख़ुदा तआला के घर के निर्माण को अपने चाव पर प्राथमिकता दी। वास्तव में प्राथमिकता और चाव अल्लाह तआला की इच्छा पूर्ति ही है जो अहमदी बच्चे ही समझ सकते हैं जिनको बचपन से ही आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस बात का बोध प्राप्त हो जाता है कि मस्जिद के निर्माण में योगदान करने वाला जन्नत में अपना घर बनाता है। एक बच्ची ऐतकाफ़ में बैठी थी उसने यहाँ के प्रबन्धकों से सम्पर्क किया और अपना आभूषण मस्जिद के लिए पेश किया। एक अन्य वाक़िफ़-ए-नौ बच्ची भी ऐसी है जिसने समस्त आभूषण तथा जेब ख़र्च के रूप में प्राप्त हुई जो धन राशि उसको मिली हुई थी, उसने एक लिफ़ाफ़े में डाल कर और पत्र लिख कर अपने वालिद के तकिये के नीचे रख दिया कि यही सब कुछ मेरे पास है इसके अतिरिक्त कोई ऐसी वस्तु नहीं जो मैं इस मस्जिद के लिए ख़ुदा के समक्ष पेश कर सकूँ। ऐसी नौजवान बच्चियाँ भी हैं जिनकी नई नई शादी हुई थी और उन्होंने अपने आभूषणों के शौक़ पूरे नहीं किए थे, अपने समस्त आभूषण मस्जिद के निर्माण हेतु पेश कर दिए। बहुत सी महिलाओं ने जिनके पतियों ने पहले ही अच्छे वादे किए हुए थे तथा सम्पूर्ण अदायगी कर दी थी, उन महिलाओं ने अपने आभूषण और जो जमा की हुई पूंजी थी वह मस्जिद के निर्माण हेतु अदा कर दी। दो महिलाएँ, यह बताया गया कि यहाँ ऐसी थीं जिनमें आर्थिक क़ुर्बानी का सामर्थ्य नहीं था अथवा उनके पास कुछ नहीं था परन्तु उनके पास पाकिस्तान में पिता की ओर से पैत्रिक सम्पत्ति में से मकान मिला था उन्होंने वह मकान बेच कर उसकी कुल रक़म जो वहाँ के इलाक़ों में थी, मस्जिद के निर्माण में अदा कर दी। एक ख़ादिम ने मस्जिद में देने के लिए एक बड़ी धन राशि का वादा किया था जिसमें एक भाग उनकी पत्नि की ओर से था। परन्तु दुर्भाग्य वश इस जोड़े का विभाजन हो गया परन्तु उस नौजवान ने कहा, नहीं! क्यँकि मैंने वादा किया था उसकी ओर से, इस लिए विभाजन के बावजूद मैं ही यह वादा पूरा करुंगा और सम्पूर्ण अदायगी कर दी। मालमो जमाअत के एक ख़ादिम जो अस्थाई नौकरी करते थे जब उन्हें मस्जिद का वादा बढ़ाने की प्रेरणा दी गई तो उन्होंने दस हज़ार करोनर से बढ़ा कर अपना वादा एक लाख करोनर कर दिया। अल्लाह तआला ने इस क़ुर्बानी के परिणाम स्वरूप उन्हें स्थाई नौकरी भी अता फ़रमा दी तथा पहले से भी अच्छी और नई गाड़ी ख़रीदने की भी उन्हें तौफ़ीक़ अता फ़रमाई। यह वह क़ुर्बानी की रूह है जो हमें बहुत से अहमदियों में प्रत्येक स्थान पर दिखाई देती है।

इस मस्जिद की जगह और निर्माण तथा भवन के विषय में भी संक्षेप में बता दूँ कि मस्जिद के निर्माण की योजना 1999 में आरम्भ हुई थी। इसके लिए मुकर्रम अहसानुल्लाह साहब ने पाँच हज़ार वर्ग मीटर का प्लाट ख़रीद कर जमाअत को पेश किया था। यह भाग एक टीले पर है तथा एक विशेष स्थान पर स्थित है। मेन हाई वे यहाँ से गुज़रती है निकट से, और नार्वे तथा स्वीडन को पूरे यूरोप से भी मिलाती है और इस प्रकार स्वीडन तथा नार्वे के समस्त बड़े नगरों को भी मिलाती है। बड़ी व्यस्त हाई वे है जहाँ दूर से ही मस्जिद की सुन्दर तथा विशाल इमारत प्रत्येक आने जाने वाले को दिखाई देती है तथा तौहीद का पैग़ाम देती है। अल्लाह करे कि प्रत्येक अहमदी भी अपना हक़, निर्माण के पश्चात अदा करे और तबलीग़ के द्वारा भी यह मस्जिद एकेश्वर वाद को सदैव फैलाने का माध्यम बनी रहे और इसकी वास्तविक सुन्दरता जो दीन की शिक्षा की सुन्दरता है तथा जिस उद्देश्य के लिए बनाई गई है, वह आलोकिक होकर चमके।

इस भवन का समूचा निर्मित क्षेत्रफल 2353 वर्ग मीटर है। पाँच भवन इसमें सम्मिलित हैं, बड़े भवन हैं। मस्जिद महमूदिया मूल मस्जिद का क्षेत्रफल 1494 लगभग 1500 वर्ग मीटर है। खेल के लिए हॉल है साढ़े सात सौ वर्ग मीटर इसके अतिरिक्त अन्य भवन हैं। मस्जिद के दो हॉल हैं, एक ऊपर एक नीचे, पुरुषों के लिए तथा महिलाओं के लिए। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से सतरह सौ लोग एक साथ नमाज़ अदा कर सकते हैं। मस्जिद निर्माण का दायित्व भी तभी अदा होगा जब इसको इबादत करने वालों से अधिक से अधिक आबाद करेंगे। ख़ुद भी यहाँ आकर अपनी नमाज़ों से इसको आबाद करेंगे तथा तबलीग़ करके इलाक़े के लोगों को भी इस्लाम से परिचित कराएँगे और यही बात है जिसकी ओर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें एक स्थान पर ध्यान दिलाई है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि इस समय हमारी जमाअत को मस्जिदों की बड़ी आवश्यकता है, यह ख़ाना-ए-ख़ुदा (ख़ुदा का घर) होता है। जिस गाँव अथवा शहर में हमारी मस्जिद स्थापित हो गई तो समझो कि जमाअत की प्रगति की आधार शिला पड़ गई। यदि कोई ऐसा गाँव हो या शहर, जहाँ मुसलमान कम हों अथवा न हों और

वहाँ इस्लाम की प्रगति करनी हो एक मस्जिद बना देनी चाहिए। फिर ख़ुदा स्वयं मुसलमानों को खींच लावेगा अर्थात दूसरेमुसलमान भी आ जाएँगे तथा यहाँ के स्थानीय लोगों की भी संख्या बढ़ेगी परन्तु फ़रमाया- शर्त यह है मस्जिद की स्थापना में श्रद्धा की भावना हो, अल्लाह के लिए इसे किया जावे। निजि स्वार्थ अथवा किसी अन्य भावना को कदापि दख़ल न हो, तब ख़ुदा बरकत देगा। एक शर्त पर प्रत्येक को सदैव विचार करना चाहिए। पूरी निष्ठा हो भावना में तथा किसी प्रकार शर और फ़ितना दिलों में न हो तथा विशुद्ध होकर ख़ुदा तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए क़ुर्बानियाँ की जाएँ तथा मस्जिद बनाई जाए और मस्जिद को आबाद किया जाए तो फिर अत्यधिक बरकत पड़ती है। परस्पर एकमत और एकता पैदा करें और इसके लिए अल्लाह तआला के बताए हुए मार्ग पर चलें। इसके लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने नमाज़ों और मस्जिदों से संदर्भ में हमें जो उपदेश दिए हैं, वे मैं पेश करता हूँ। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि नमाज़ में जो जमाअत का सवाब रक्खा है उसका अभिप्रायः यही है कि एकता पैदा होती है और फिर इस एकता को क्रियान्वित रंग में लाने की यहाँ तक हिदायत और निर्देश है कि परस्पर पाँव भी बराबर हों जब सफ़ें बनाकर खड़े हों तो बराबर पाँव रक्खें, ऐड़ियाँ एक लाईन में हों, एक सीध में हों तथा सफ़ सीधी हो तथा एक दूसरे से मिले हुए हों। फ़रमाया कि इसका अभिप्रायः यह है कि मानो एक ही इंसान का हुक्म रक्खें, ऐसे सीधे हों कि लगे कि एक ही इंसान हैं तथा एक के नूर दूसरे में प्रवाहित कर सकें। किसी में अधिक आध्यात्मिकता है किसी में कम है तो आपने फ़रमाया कि जो रूहानियत का नूर है एक दूसरे में प्रवाहित करे। वह अन्तर जिसके द्वारा स्वाभिमान तथा स्वार्थ पैदा होता है, वह न रहे। यह इच्छा थी आपकी। स्वाभिमान तथा स्वार्थ पूर्णतः समाप्त हो जाए और एक हो जाओ। फ़रमाया कि ख़ूब याद रक्खो कि इंसान में यह शक्ति है कि वह दूसरे के नूर को ग्रहण करता है फिर इसी एकता के लिए आदेश है कि दैनिक नमाज़ें मुहल्ले की मस्जिद में तथा सप्ताह के बाद शहर की मस्जिद में और फिर साल के बाद ईद गाह में एकत्र हों तथा पूरी धरती के मुसलमान साल में एक बार बैतुल्लाह में एकत्र हों। इन समस्त आदेशों का उद्देश्य वही एकता है। नमाज़ से लेकर हज तक जितने भी निर्देश हैं, इबादत है, इनका उद्देश्य क्या है? ताकि एक क़ौम बन जाएँ मुसलमान। अब दुर्भाग्यवश सबसे अधिक अनेकता और फूट तथा फ़साद इस समय मुसलमानों में है। अतः हम अहमदी हैं जिन्होंने ये नमूने क़ायम करने हैं तथा दुनया को वास्तविक इस्लाम की सुन्दर शिक्षा के बारे में बताना है।

फिर आप फ़रमाते हैं- मस्जिदों की वास्तविक प्रतिष्ठा इमारतों के साथ नहीं बल्कि नमाज़ियों के साथ है जो निष्ठा पूर्वक नमाज़ पढ़ते हैं। फ़रमाया कि रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मस्जिद छोटी सी थी, खजूर की छड़ियों से उसकी छत बनाई गई थी तथा वर्षा के समय छत में से पानी टपकता था, मस्जिद की रौनक़ नमाज़ियों के साथ है। मस्जिदों के सम्बंध में आदेश है कि तक़्वा के लिए बनाई जाएँ। अतः हमें अल्लाह तआला की प्रसन्नता के लिए किए हुए प्रत्येक कार्य के पश्चात यह विचार करना चाहिए कि किसी एक उद्देश्य की प्राप्ति करने के बाद हम अपने जीवन के मूल उद्देश्य से दूर न हो जावें। यही न समझ लें कि हमने एक सुन्दर मस्जिद बना ली तो हमारे कर्त्तव्य अदा हो गए। इस मस्जिद के निर्माण के बाद हमारा वास्तविक कार्य अब आरम्भ हुआ है। अतः सदैव याद रखना है, हमने उस इबादत का हक़ अदा करना है और इबादत का हक़ सबसे अधिक मस्जिदों की आबादी बढ़ाने से ही अदा होता है। फिर एक रिवायत में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो मस्जिद की ओर सुबह व शाम को जाता है अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में मेहमान नवाज़ी (आतिथ्य) का सामान तय्यार करता है। इस प्रकार मस्जिदों में आने वाले अल्लाह तआला के अतिथि होकर रहते हैं। इस मस्जिद के निर्माण का आभार आपस में पहले से बढ़कर प्यार एवं मुहब्बत के प्रदर्शन के द्वारा भी हमने करना है। आप सब ने करना है जो यहाँ रहने वाले हैं और जो दुनया में कहीं भी रहने वाले अहमदी हैं। जब मस्जिदों में जाएँ तो मस्जिदों के ये हक़ भी अदा करें। इस मस्जिद के निर्माण के बाद आपने पहले से बढ़कर अपने नमूने इस्लाम की शिक्षा के लोगों को दिखाने हैं और इनसे उनको परिचित करना है।

अतः मस्जिद बनाने का उद्देश्य अल्लाह तआला पर ईमान है और अल्लाह तआला पर ईमान उस समय व्यापक होता है जब हर प्रकार के शिर्क से अपने आपको सुरक्षित रक्खे। हर चीज़ के देने वाला ख़ुदा तआला को समझे। फिर आख़िरत पर ईमान है, इसकी व्याख्याएँ हैं परन्तु यदि इंसान केवल इस बात पर ही विचार कर ले, बहुत सारी चीज़ें आख़िरत के विषय में आती हैं कि आख़िरत दुनया से अच्छी है, केवल इस बात पर यदि इंसान विचार करे तो फिर दुनया की छोटी मोटी वस्तुओं की प्राप्ति पर अपनी पूरी शक्ति लगाने के बजाए, अपना ज़ोर लगाने के बजाए, आख़िरत के पुरस्कारों का उत्तराधिकारी अपने आपको बनाने के लिए इंसान फिर प्रयास करे।

अल्लाह तआला एक स्थान पर फ़रमाता है- وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اتَّقَوْا ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ۝ [۱۲:۱۰۹] और आख़िरत का घर उन लोगों के लिए जिन्होंने तक़्वा धारण किया, निःसन्देह अधिक उत्तम है। अब एक घर तो मस्जिद का निर्माण करके एक मोमिन बनाता है परन्तु उस घर की आबादी, मस्जिद की आबादी तक़्वा से सम्बंधित है। इस प्रकार मस्जिद के निर्माण का हक़ भी तक़्वा पर चलने से अदा होगा और तक़्वा के विषय में एक अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं-

मुत्तक़ी बनने के लिए यह अनिवार्य है कि इसके पश्चात मोटी बातों जैसे व्यभिचार, चोरी, अधिकारों का हनन, लोगों के अधिकारों को हड़प करना अथवा दिखावा, घृणा, कंजूसी को छोड़ने में दृढ़ हो तो हीन आचरण से बचकर उनकी तुलना में शुभ आचरण में उन्नति करे। गन्दे और व्यर्थ आचरण जो हैं, बुरे आचरण जो हैं उनको छोड़े तथा उच्च एवं सर्वोत्तम आचरण को न केवल धारण करे अपितु उनमें उन्नति करे। फ़रमाया- लोगों के संग शालीनता से पेश आओ, लोगों से शालीनता, सुशीलता एवं सद्भावना से पेश आवे। ये हैं आचारण, यह है तक़्वा कि लोगों से भी मुहब्बत और प्यार से पेश आओ, विनम्र आचरण से पेश आओ, उनके साथ सहानुभूति करो, इस बात से ऊपर होकर कि वह कौन है। प्रत्येक से, चाहे वह मुसलमान है, ग़ैर मुस्लिम है, अपना है, ग़ैर है। अल्लाह तआला के साथ सच्ची मुहब्बत और सच्चाई दिखलावे। सेवाओं के शुभ अवसरों को खोजे। अल्लाह तआला की रूचि की दृष्टि उस पर पड़े, ऐसे काम वह करे। इन बातों से इंसान मुत्तक़ी कहलाता है। अतः जैसा कि मैंने कहा है कि हमारे दायित्व बढ़ रहे हैं। इस मस्जिद का हक़ अदा करने के लिए बड़ी क्रान्ति हमें अपने भीतर पैदा करनी होगी। फिर नमाज़ के क़याम की ओर ध्यान दिलाया है और क़याम-ए-नमाज़ पाँच समय जमाअत के साथ नमाज़ है। अतः इस मस्जिद की सुन्दरता भी नमाज़ियों की संख्या पर है। ऐसे नमाज़ियों की संख्या पर जो विशुद्ध होकर ख़ुदा तआला की इबादत करना चाहते हैं अथवा करने वाले हैं। फिर ज़कात की ओर ध्यान दिलाकर निर्धनों के अधिकारों की ओर भी ध्यान दिला दिया।

अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-करीम में कई स्थानों पर ज़कात की अदायगी की ओर भी ध्यान दिलाया है, अपने माल ख़र्च करने की ओर ध्यान दिलाया है तथा विशेष रूप से ज़कात की ओर ध्यान केन्द्रित करने के लिए आदेश दिया है। ज़कात का तो ख़िलाफ़त के निज़ाम के साथ भी एक प्रकार से बड़ा घनिष्ट सम्बंध है कि इस्तख़लाफ़ वाली आयत जिसमें ख़िलाफ़त के निज़ाम का निर्देश तथा भविष्य वाणी फ़रमाई गई है, उससे अगली आयत में नमाज़ के क़याम और ज़कात की अदायगी की ओर ध्यान दिलाया है। दीन को सम्पूर्ण रूप से प्रभुत्व इस ज़माने में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के माध्यम से ही मिलनी है, मिलनी थी तथा मिली है क्यूँकि आप आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे सेवक के रूप में दुनया में आए और आपको अल्लाह तआला ने भेजा ही इस लिए कि इस्लाम की शिक्षा के वास्तविक नमूने स्थापित हों। इस्लाम की खोई हुई साख को पुनः स्थापित करें। आप ख़ातमुल ख़ुल्फ़ा (उच्चतम ख़लीफ़ः) भी हैं। और दुनया को बताएँ कि इस्लाम की सुन्दरता क्या है। इस प्रकार आपके आने का उद्देश्य ही यह है कि दुनया इस्लाम की सुन्दरता देख सके तथा दूसरी आयत जो मैंने तिलावत की है वह सूरः हज की आयत है इसमें अल्लाह तआला ने उन लोगों का वर्णन किया है जिनको अल्लाह तआला जब प्रभुत्व प्रदान करता है तो वे जिन विशेषताओं के द्योतक बनते हैं उनमें नमाज़ का क़याम भी है, ज़कात की अदायगी भी है, नेक बातों को फैलाना भी है तथा बुरी बातों से रोकना भी है। ख़िलाफ़त का निज़ाम आपके द्वारा ही इस ज़माने में जारी होना था और हुआ है तथा आज सारे विश्व में केवल अहमदिया जमाअत ही है जिसमें ख़िलाफ़त का वह निज़ाम जारी है जो सही इस्लाम की शिक्षा का प्रचार कर रहा है, इसे फैला रहा है।

अतः प्रत्येक अहमदी का यह बहुत बड़ा दायित्व है कि इस ओर ध्यान दे, इस उद्देश्य को समझे तथा इसके लिए अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करते हुए अपनी सोचों को ख़ुदा तआला की इच्छानुसार ढालने का हर समय प्रयास करते रहें।

अल्लाह करे हम इन बातों के समझने वाले हों, अल्लाह तआला का भी हक़ अदा करने वाले हों, आपस की मुहब्बत में भी बढ़ने वाले हों, मस्जिदों का भी हक़ अदा करने वाले हों तथा तबलीग़ का भी हक़ अदा करने वाले हों। आर्थिक क़ुर्बानी का केवल क्षणिक जोश ही हम में न हो बल्कि आध्यात्मिक प्रगति के निरन्तर जोश को अपनी अवस्थाओं में समावेश करने वाले और जारी करने वाले हों ताकि इस ज़माने के इमाम और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे आशिक़ के साथ जो हमने बैअत का एहद किया है उसे पूरा कर सकें। अल्लाह तआला प्रत्येक को इसका सामर्थ्य प्रदान करे।